

राजस्थान में कृषि का वर्तमान परिदृश्य और भविष्य की संभावनाएँ

डॉ. महेन्द्र लोमरोड*

सहायक आचार्य अर्थशास्त्र विभाग, श्री बी.आर. मिर्धा राजकीय महाविद्यालय नागौर।

*Corresponding Author: mlomror88@gmail.com

Citation: लोमरोड, महेन्द्र (2026). राजस्थान में कृषि का वर्तमान परिदृश्य और भविष्य की संभावनाएँ. *International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science*, 08(02(II)), 81–90. [https://doi.org/10.62823/IJEMMASSS/8.2\(II\).9036](https://doi.org/10.62823/IJEMMASSS/8.2(II).9036)

सार

यह शोधपत्र वर्ष 2010–2011 से 2024–25 तक की अवधि के उपलब्ध आधिकारिक आँकड़ों के आधार पर राजस्थान की कृषि की वर्तमान स्थिति एवं भविष्य की संभावनाओं का परीक्षण करता है। इसमें यह पाया गया है कि कृषि और उससे संबद्ध क्षेत्रों में मूल्य वृद्धि अच्छी रही है। सकल राज्य मूल्य संवर्धन 2019–20 से 2024–25 तक लगभग 9.6 प्रतिशत चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर से बढ़ा है। राज्य के खाद्यान्न उत्पादन में 2010 के दशक के मध्य में पड़े सूखे जैसे कारणों से उतार-चढ़ाव देखा गया है जो साल 2024–25 तक यह बढ़कर लगभग 267.7 लाख टन हो गया। फसलों की पैदावार विशेषकर अनाज, तिलहन और गन्ना में सामान्य रूप से सुधार हुआ है, जिससे समग्र अखिल-फसल उत्पादन सूचकांक 158 (2010–11) से बढ़कर 215 (2023–24) हो गया है। राजस्थान रेपसीड-सरसों, बाजरा, ग्वार और कुल तिलहन उत्पादन में भारत में प्रमुख राज्य रहा है और देश के रेपसीड-सरसों के कुल उत्पादन का लगभग आधा हिस्सा यहीं पैदा होता है। राज्य की कृषि शुष्कता, जल संकट और बाजार की बाधाओं जैसी चुनौतियों का सामना कर रही है, जिनका समाधान सरकार सिंचाई, बीज, खाद और किसान कल्याण संबंधी कार्यों पर पहल करके कर रही है। भविष्य में भारतीय पारम्परिक ज्ञान पर आधारित जल प्रणालियों एवं जल प्रबंधन, फसल विविधीकरण और जलवायु-अनुकूल प्रथाओं में निरंतर निवेश से विकास को गति मिलने की उम्मीद है, हालाँकि राजस्थान की भौगोलिक दशाओं के कारण अनियमित मानसून से होने वाली अस्थिरता एक प्रमुख जोखिम हमेशा बनी हुई रहेगी। निष्कर्ष सतत विकास सुनिश्चित करने के लिए संसाधन दक्षता और विविधीकरण पर नीतिगत ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता की ओर संकेत करते हैं।

शब्दकोश: सकल राज्य मूल्य संवर्धन, खाद्यान्न, उत्पादकता, सिंचाई, जलवायु जोखिम, विविधीकरण।

प्रस्तावना

राजस्थान की कृषि राज्य की अर्थव्यवस्था और ग्रामीण जीवनयापन की रीढ़ है। सकल राज्य मूल्य वर्धन में इसका महत्वपूर्ण योगदान है और ग्रामीण आबादी का बड़ा हिस्सा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर है। राज्य के विविध कृषि-जलवायु क्षेत्रों के कारण यहाँ मोटे अनाजों से लेकर तिलहन और दलहनों तक तथा विभिन्न नकदी फसलों की खेती की जाती है। लेकिन राज्य का अधिकांश भाग शुष्क एवं अर्ध-शुष्क है और खेती मुख्यतः वर्षा पर निर्भर रहती है। इस कारण सरकार ने जल प्रबंधन, उन्नत बीज वितरण और किसान कल्याण योजनाओं पर विशेष बल दिया है।

इस पृष्ठभूमि में, यह शोध-पत्र राजस्थान आर्थिक समीक्षा 2024-25 के आँकड़ों का उपयोग करके वर्ष 2010 से 2025 तक की प्रवृत्तियों का विश्लेषण कर फसल विविधीकरण और प्रदर्शन, कृषि की चुनौतियों, नीतिगत उपायों और संभावनाओं पर प्रकाश डालता है। इनके विश्लेषण हेतु औसत, प्रतिशत एवं प्रवृत्ति विश्लेषण विधियों का प्रयोग किया गया है।

साहित्य समीक्षा (Review of Literature)

चंद्रा और कालरा (2017) ने राजस्थान के कृषि क्षेत्र पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों का अध्ययन करते हुए निष्कर्ष निकाला कि वर्षा की अनिश्चितता, तापमान परिवर्तन और जल उपलब्धता में कमी कृषि उत्पादकता को प्रतिकूल रूप से प्रभाव डालती है। **मोदी एवं गोपीनाथ (2019)** ने राजस्थान में 1957-2017 के मध्य फसल प्रतिरूप में हुए परिवर्तनों का विश्लेषण करते हुए अपने अध्ययन में बताया कि राज्य में कृषि धीरे-धीरे पारंपरिक मोटे अनाज आधारित प्रणाली से अधिक व्यावसायिक एवं उच्च-मूल्य वाली फसलों की ओर स्थानांतरित हुई है। इसका कारण सिंचाई विस्तार, उन्नत बीज तथा बाजार उन्मुख उत्पादन रहे। **भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (2020)** ने बताया कि पानी की कमी, भूमिगत जल स्तर का गिरना, अत्यधिक जल दोहन और मृदा क्षरण राजस्थान की कृषि की प्रमुख समस्याएँ हैं। **सिंह एवं मीणा (2021)** के अध्ययन के अनुसार उन्नत बीजों, सिंचाई और तकनीकी सुधारों के कारण बाजरा एवं सरसों की उत्पादकता एवं उत्पादन में सुधार हुआ है। **चौहान एवं कूलश्रेष्ठ (2024)** के अध्ययन में जलवायु परिवर्तन के कारण कृषि उत्पादन में भारी उतार-चढ़ाव होना बताया गया है। **राजस्थान आर्थिक समीक्षा (2024-25)** राजस्थान सरकार की आर्थिक समीक्षा के अनुसार राज्य की कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों का सकल मूल्य वर्धन निरंतर बढ़ने के साथ कृषि क्षेत्र में उत्पादकता वृद्धि, तिलहन उत्पादन तथा जल प्रबंधन नीतियाँ कृषि विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

पूर्व अध्ययनों में अधिकांश ध्यान उत्पादन अथवा उत्पादकता पर केंद्रित रहा है, जबकि वर्तमान अध्ययन कृषि विकास, फसल विविधीकरण, सरकारी हस्तक्षेप और भविष्य की संभावनाओं का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

अध्ययन के उद्देश्य

- राजस्थान की कृषि की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करना।
- 2010-2025 की अवधि में कृषि उत्पादन एवं उत्पादकता की प्रवृत्तियों का अध्ययन करना।
- राजस्थान में फसल विविधीकरण तथा प्रमुख फसलों के प्रदर्शन का मूल्यांकन करना।
- कृषि विकास में बाधक प्रमुख चुनौतियों की पहचान करना।
- सरकारी योजनाओं एवं नीतिगत उपायों के प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पना

- राजस्थान में कृषि उत्पादन और कृषि क्षेत्र के सकल मूल्य वर्धन (GVA) के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।
- फसल विविधीकरण का कृषि उत्पादकता पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं है।
- सरकारी हस्तक्षेपों का कृषि विकास पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं है।

कृषि की प्रवृत्तियाँ (2010-2025)

पिछले डेढ़ दशक में, राजस्थान के कृषि क्षेत्र ने मूल्य के संदर्भ में मजबूत वृद्धि दर्ज की है और वर्ष-दर-वर्ष परिवर्तनशीलता के बावजूद उत्पादन में सामान्यतः वृद्धि हुई है। राज्य के कृषि प्रदर्शन की प्रवृत्तियों को निम्नानुसार बिन्दुवार प्रस्तुत हैं—

- कृषि जीवीए और विकास—** राजस्थान में कृषि और संबद्ध क्षेत्रों का सकल मूल्य वर्धन (जीवीए) उल्लेखनीय रूप से बढ़ा है। वर्तमान मूल्यों पर जीवीए 2020–21 में लगभग ₹2.92 लाख करोड़ से बढ़कर 2024–25 में ₹4.23 लाख करोड़ हो गया। यह 2020–21 से 2024–25 तक लगभग 9.6 प्रतिशत की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (CAGR) के अनुरूप है। 2011–12 के स्थिर मूल्यों पर जीवीए ₹1.19 लाख करोड़ से बढ़कर ₹2.18 लाख करोड़ हो गया, जो निरंतर वास्तविक वृद्धि को दर्शाता है। पिछले कुछ वर्षों में पूर्व के वर्षों की तुलना में विकास दर में कमी आई है। उदाहरण के लिए, वर्तमान मूल्य जीवीए 2023–24 में 7.97 प्रतिशत और 2024–25 में 11.44 प्रतिशत बढ़ा। महामारी के वर्षों (2020–21) में वास्तव में कमी आने से पहले तेजी (वर्तमान मूल्यों पर 12.3 प्रतिशत वृद्धि) देखी गई थी। कुल मिलाकर, ऊपर की ओर रुझान कृषि उत्पादन और मूल्य में वृद्धि का संकेत देता है।

Year	GVA at Current Prices (₹ Crore)	GVA at Constant Prices (₹ Crore)	Growth Rate at Current (%)	Growth Rate at Constant (%)
2020-21	292644	186902	12.27	6.30
2021-22	322739	191571	10.28	2.50
2022-23 (Revised)	351442	201460	8.89	5.16
2023-24 (Revised)	379460	207628	7.97	3.06
2024-25 (Advance)	422854	218112	11.44	5.05

स्रोत:— आर्थिक समीक्षा 2024–25

- खाद्यान्न उत्पादन—** राज्य का खाद्यान्न उत्पादन वर्ष 2010–11 के 235.7 लाख मीट्रिक टन से घटकर वर्ष 2015–16 में 182.9 लाख मीट्रिक टन ही रह गया, वे फिर 2020–21 तक बढ़कर 273.2 लाख मीट्रिक टन हो गया, फिर 2023–24 में घटकर लगभग 241.9 लाख मीट्रिक टन रह गया और 2024–25 में फिर से बढ़कर 267.7 लाख मीट्रिक टन होने का अनुमान है। इसका कारण मानसून की परिवर्तनशीलता से कुल खाद्यान्न उत्पादन (अनाज व दालें) में उतार-चढ़ाव आया है। 2010 के दशक के मध्य के सूखे वाले वर्षों में उत्पादन में गिरावट आई थी, लेकिन उसके बाद के वर्षों में इसमें तेजी आई। इस प्रकार शुरुआती गिरावट के बाद 2020 के दशक में राजस्थान में खाद्यान्न उत्पादन में जोरदार सुधार हुआ। ये उतार-चढ़ाव वर्षा के प्रति संवेदनशीलता को उजागर करते हैं। वर्ष 2014–16 में तीव्र गिरावट देखी गई (2010–11 के 235.7 एलएमटी से 2014–15 में 193.43 व 2015–16 में 182.9 तक कम हो गया), जबकि 2016–17 और 2020–21 में अच्छी वर्षा ने उत्पादन को नई ऊंचाई (क्रमशः 231.4 और 273.2 एलएमटी) पर पहुंचा दिया।

S. No.	Agriculture Year	Total Food Grain Production (Lakh MT)
1.	2010-11	235.74
2.	2011-12	219.25
3.	2012-13	200.60
4.	2013-14	207.19
5.	2014-15	196.43
6.	2015-16	182.87
7.	2016-17	231.40
8.	2017-18	221.05
9.	2018-19	231.60
10.	2019-20	266.35
11.	2020-21	273.24
12.	2021-22	231.92
13.	2022-23 (Revised)	252.80
14.	2023-24 (Final)	241.86
15.	2024-25 (Advance)	267.67

स्रोत:— आर्थिक समीक्षा 2024–25

- फसलवार उत्पादन**— फसल समूहों के आधार पर विश्लेषण करने पर उत्पादन आंकड़ें दर्शाते हैं कि 2010–25 के दौरान अनाज, दालों और तिलहनों के उत्पादन में वृद्धि हुई है। **अनाज**— इसका उत्पादन 2010–11 में 203.22 एलएमटी से घटकर 2015–16 में 162.97 एलएमटी हो गया था जो फिर से बढ़कर 2024–25 में 219.83 एलएमटी हो गया। **दालें**— इसमें भी वर्ष 2015–16 के बाद नाटकीय वृद्धि देखी गई, जो 2015–16 के लगभग 19.90 एलएमटी से बढ़कर 2024–25 में 47.84 एलएमटी तक पहुँच गया। यह विस्तारित क्षेत्र (विशेष रूप से मूंग, मोठ, चना) और बेहतर पैदावार दोनों को दर्शाता है। **तिलहन**— कुल तिलहन उत्पादन 66.42 एलएमटी (2010–11) से बढ़कर 2024–25 में 96.17 एलएमटी हो गया, जो 2021–23 में 100 एलएमटी से अधिक (2022–23 में 103.41 एलएमटी) तक पहुँच गया था। **गन्ना**— इसका उत्पादन मामूली और कुछ हद तक अस्थिर (3.26–5.31 एलएमटी रेंज) रहा है, जो सीमित सिंचित क्षेत्र को दर्शाता है। **कपास**— इसका उत्पादन वर्ष 2010–11 के 8.57 लाख गांठ 2020–21 में 54.5 लाख गांठ तक पहुँच गया था, जो 2024–25 तक घटकर 18.45 लाख गांठ रह जाएगा। यह वैकल्पिक फसलों की ओर रुख या कीट समस्याओं जैसे कारकों के कारण कपास में गिरावट का संकेत देता है। इस प्रकार अनाज, दलहन और तिलहन फसल उत्पादन में प्रमुख भूमिका निभाते हैं और हाल के वर्षों में इनमें वृद्धि का रुझान रहा है।

S. No.	Agriculture Year	Cereals (Lakh MT)	Pulses (Lakh MT)	Food Grain (Lakh MT)	Oilseed (Lakh MT)	Sugarcane (Lakh MT)	Cotton (Lint) (Lakh Bales)
1.	2010-11	203.22	32.52	235.74	66.42	3.69	8.57
2.	2011-12	195.72	23.53	219.25	57.65	4.51	29.42
3.	2012-13	181.05	19.55	200.6	63.71	4.24	26.1
4.	2013-14	182.49	24.71	207.19	60.41	3.63	21.87
5.	2014-15	176.93	19.5	196.43	53.21	4.05	25.96
6.	2015-16	162.97	19.9	182.87	55.11	5.31	20.65
7.	2016-17	197.21	34.19	231.4	65.19	4.89	26.52
8.	2017-18	184.71	36.34	221.05	61.14	3.82	32.18
9.	2018-19	194.02	37.59	231.6	76.64	4.48	34.73
10.	2019-20	221.41	44.94	266.35	73.2	3.26	47.39
11.	2020-21	233.58	39.67	273.24	80.54	3.94	54.52
12.	2021-22	191.4	40.52	231.92	102.77	3.22	42.19
13.	2022-23 (R)	216.37	36.43	252.8	103.41	3.15	27.76
14.	2023-24 (F)	208.52	33.34	241.86	101.22	3.63	26.21
15.	2024-25 (A)	219.83	47.84	267.67	96.17	4.4	18.45

स्रोत:— आर्थिक समीक्षा 2024–25

- उत्पादकता (उपज)**— अनाज (मुख्यतः गेहूँ, मक्का, ज्वार) की उत्पादकता वर्ष 2010–11 के लगभग 1863 किलोग्राम/हेक्टेयर से बढ़कर 2023–24 में 2233 किलोग्राम/हेक्टेयर हो गई, जो लगभग 20 प्रतिशत की वृद्धि को दर्शा रहा है। तिलहन की उत्पादकता 2010 के लगभग 1203 किलोग्राम/हेक्टेयर से बढ़कर 2023–24 में 1525 किलोग्राम/हेक्टेयर हो गई। गन्ने की उत्पादकता बहुत अधिक है जो 2010–11 के 66,000 किलोग्राम/हेक्टेयर से बढ़कर लगभग 87,000 किलोग्राम/हेक्टेयर हो गया, जो गहन सिंचाई को दर्शाता है। चावल और मक्का (अनाज का एक उपसमूह) की पैदावार में भी सुधार हुआ है। अध्ययन अवधि में दलहन की पैदावार (मूंग, चना, मोठ आदि) में उतार-चढ़ाव आया है तथा इसकी उत्पादकता में कोई विशेष परिवर्तन नहीं होने के कारण यह उत्पादकता में कोई सुधार नहीं होना दर्शाता है। दलहन की उत्पादकता वर्ष 2019–20 तक 709 किलोग्राम/हेक्टेयर तक बढ़ने के बाद यह 2023–24 में घटकर लगभग 610 किलोग्राम/हेक्टेयर रह गई। अध्ययन अवधि में राजस्थान में कृषि उत्पादकता में सुधार हुआ है परंतु इस अभी और सुधार की आवश्यकता है।

Agriculture Year	Cereals (Kg/ha)	Pulses (Kg/ha)	Food Grains (Kg/ha)	Oilseeds (Kg/ha)	Sugarcane (Kg/ha)	Cotton (Lint) (Kg/ha)*	Guar Seed (Kg/ha)
2010-11	1863.3	684.4	1505.5	1203.5	66991	458	N/A
2011-12	1959	528.8	1518.3	1246.2	70347.9	483	N/A
2012-13	1975.2	602.4	1616.2	1295.5	73099	529	N/A
2013-14	1895.5	588.6	1498.7	1144.1	68974.7	557	N/A
2014-15	1859.2	580	1525.2	1192.5	72573.1	533	N/A
2015-16	1781	514.7	1404.8	1137.9	86495.2	461	N/A
2016-17	2069	595	1514.7	1350.7	71294.4	506	N/A
2017-18	2012.9	619.9	1470.1	1473.4	70363	551	N/A
2018-19	2133.8	636.4	1544.2	1592.5	83447.8	548	N/A
2019-20	2248	709	1646	1257	73055	624	452
2020-21	2423	671	1757	1523	79111	675	458
2021-22	2093	628	1486	1484	75852	558	419
2022-23	2220	657	1653	1449	89307	579	540
2023-24	2233	610	1634	1525	87161	444	513

स्रोत:— आर्थिक समीक्षा 2024—25

- कुल उत्पादकता लाभ**— क्षेत्र विस्तार के साथ कुल उत्पादन भी बढ़ा है। तालिका में देखा जा सकता है कि अध्ययन अवधि में यह देखा जा सकता है सभी फसलों का उत्पादन सूचकांक (आधार 2005—08=100) के अनुसार वर्ष 2010—11 में 158.8 से बढ़कर 2023—24 में 215.2 हो गया। इस सूचकांक में 2016—17 से लगातार वृद्धि फसल उत्पादन में व्यापक वृद्धि को दर्शाती है।

Agriculture Year	2010-11	2011-12	2012-13	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17	2017-18	2018-19	2019-20	2020-21	2021-22	2022-23 (RF)	2023-24 (F)
All Crops Index	158.77	153.49	147.5	156.16	143.34	145.62	175.12	170.17	183.07	202.56	207.85	201.57	209.63	215.15

स्रोत:— आर्थिक समीक्षा 2024—25

फसल विविधीकरण और प्रदर्शन

राजस्थान की फसल पद्धति विविध होने के साथ कुछ मोटे अनाज और तिलहनों की उल्लेखनीय क्षमता है। उच्च मूल्य वाली शुष्क क्षेत्र की फसलों के उत्पादन में यह राज्य अक्सर भारत में अग्रणी रहता है—

- रेपसीड और सरसों**— इनका राजस्थान प्रमुख उत्पादक राज्य है, जो भारत के उत्पादन में 46.1 प्रतिशत का योगदान देता है। सरसों का रकबा और पैदावार इसे तिलहन के लिए प्रथम स्थान पर रखते हैं।
- बाजरा**— राजस्थान राष्ट्रीय बाजरा उत्पादन का लगभग 44.7 प्रतिशत उत्पादन करता है, जो फिर से भारत के उत्पादन का सबसे बड़ा हिस्सा है। बाजरा यहाँ, खासकर शुष्क क्षेत्रों में खरिफ की मुख्य फसल है।
- कुल तिलहन**— सरसों, मूंगफली, तिल आदि को मिलाकर, राजस्थान भारत के तिलहन उत्पादन का लगभग 22.8 प्रतिशत उत्पादन करने के कारण भारत का शीर्ष राज्य है। सरसों का प्रभुत्व इस आंकड़े में महत्वपूर्ण योगदान देता है।
- पोषक अनाज (मोटे अनाज)**— राजस्थान पोषक अनाज (जिसमें बाजरा, ज्वार, रागी आदि शामिल हैं) का शीर्ष उत्पादक है, जो भारत के कुल उत्पादन का 15.66 प्रतिशत है। यह उत्पादन राज्य का कर्नाटक और मध्य प्रदेश से इसमें आगे रखता है।
- ग्वार (क्लस्टर बीन)**— उल्लेखनीय रूप से, राजस्थान भारत का लगभग 90.4 प्रतिशत ग्वार (ग्वार बीज) उत्पादित करता है, जो हरियाणा (दूसरे) और गुजरात (तीसरे) से कहीं आगे है। राजस्थान की शुष्क

जलवायु और ग्वार (गोंद और चारे के लिए) का व्यापक उपयोग इसे वस्तुतः एकमात्र ग्वार उत्पादक राज्य बनाता है।

इसके अलावा, राजस्थान कई अन्य फसलों में भी उच्च स्थान पर है। यह 18.8 प्रतिशत मूंगफली उत्पादन के साथ गुजरात के बाद दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक राज्य है। भारत के कूल उत्पादन में, सोयाबीन का 8.05 प्रतिशत (तीसरा स्थान), चना का 14.75 प्रतिशत (तीसरा स्थान), ज्वार का लगभग 14.9 प्रतिशत (तीसरा स्थान) और कुल दालों का 13.9 प्रतिशत (तीसरा स्थान) योगदान के साथ शीर्ष तीन राज्यों में शामिल है। ये रैंकिंग राजस्थान के अपनी जलवायु के अनुकूल शुष्क भूमि फसलों पर ध्यान केंद्रित करने को दर्शाती हैं।

राज्य का फसल विविधीकरण उच्च मूल्य वाली और सूखा-प्रतिरोधी फसलों की ओर होना उनकी प्रवृत्तियों से भी स्पष्ट है। हाल के वर्षों में, किसानों ने दलहन और तिलहन की खेती का रकबा बढ़ाया है, जिससे न केवल पोषण में सुधार हुआ है, बल्कि बाजार समर्थन (एमएसपी) और मृदा संरक्षण का भी लाभ मिला है। इन प्रमुख फसलों में मजबूत प्रदर्शन शुष्क और अर्ध-शुष्क कृषि में राजस्थान की तुलनात्मक बढ़त को रेखांकित करता है।

चुनौतियाँ और बाधाएँ

सकारात्मक प्रवृत्तियों के बावजूद राजस्थान राज्य की कृषि को कई चुनौतियों व बाधाओं का सामना करना पड़ रहा है—

- जलवायु परिवर्तनशीलता— प्रमुख बाधा शुष्कता और अनियमित वर्षा है। राजस्थान का अधिकांश भाग अर्ध-शुष्क से लेकर शुष्क है, जहाँ मानसून की वर्षा सीमित होती है। बार-बार पड़ने वाले सूखे (जैसे 2010 के दशक के मध्य में) से उपज में भारी नुकसान और उत्पादन में गिरावट आती है। यह जलवायु जोखिम उत्पादन के आंकड़ों में परिलक्षित होता है। उदाहरण के लिए, 2014–16 (सूखा काल) के दौरान खाद्यान्न उत्पादन घटकर 196–182 लाख मीट्रिक टन रह गया। असमान मानसून पर निर्भरता से उपज और आय में साल-दर-साल उतार-चढ़ाव होता है।
- जल की कमी— राज्य की भौगोलिक स्थिति के कारण जल उपलब्धता सीमित है। राजस्थान के कृषि योग्य क्षेत्रफल का केवल एक-तिहाई भाग ही सिंचित है और भूजल स्तर भी नीचा है। विशेषकर शुष्क पश्चिमी जिलों में बारहमासी जल की कमी है। इससे फसल सघनता (अधिकांशतः एकल फसल) सीमित हो जाती है और उच्च जल-मांग वाली फसलों पर भी असर पड़ता है। अपर्याप्त सिंचाई अवसंरचना और नलकूपों पर अत्यधिक निर्भरता इस समस्या को और बढ़ा देती है।
- मृदा एवं भूमि कारक— एक बड़ा क्षेत्र रेतीली या सीमांत मिट्टी (विशेषकर रेगिस्तानी क्षेत्रों) पर है, जहाँ अच्छी पैदावार के लिए गहन निवेश (उर्वरक, हरी खाद) की आवश्यकता होती है। मिट्टी की उर्वरता कम हो सकती है, जिससे उत्पादकता प्रभावित होती है। भूमि का विखंडन भी एक चुनौती है। कई किसान छोटी जोत पर खेती करते हैं, जिससे मशीनीकरण और कुशल खेती मुश्किल हो जाती है।
- बाजार और मूल्य जोखिम— किसानों को इनपुट और आउटपुट दोनों के मूल्य में उतार-चढ़ाव का सामना करना पड़ता है। कई फसलों के लिए सरकारी समर्थन मूल्य के बावजूद बाजार तक पहुँच और कटाई के बाद होने वाले नुकसान (अपर्याप्त भंडारण के कारण) समस्याएँ बनी हुई हैं। दूर-दराज के गाँवों से बाजारों तक उपज का परिवहन अक्सर चुनौतीपूर्ण होता है, जिससे लाभप्रदता प्रभावित होती है।
- संसाधन सीमाएँ— राजस्थान के खेतों में, खासकर छोटे किसानों के बीच, मशीनीकरण और तकनीक को अपनाना अभी भी सर्वव्यापी नहीं है। गुणवत्तापूर्ण आदानों (बीज, उर्वरक) और विस्तार सेवाओं की उपलब्धता क्षेत्र के अनुसार अलग-अलग होती है।

ये बाधाएँ सामूहिक रूप से उत्पादकता और किसानों की सहनशीलता को सीमित करती हैं। आँकड़ों की प्रवृत्तियाँ जैसे फसल उत्पादन में उतार-चढ़ाव और कुछ क्षेत्रों में धीमी वृद्धि आदि इन चुनौतियों के प्रभाव को रेखांकित करते हैं। इनसे निपटने के लिए संसाधन प्रबंधन और बुनियादी ढाँचे के विकास पर केंद्रित प्रयासों की आवश्यकता है।

सरकारी पहल और नीतिगत उपाय

राजस्थान सरकार ने केंद्रीय योजनाओं के साथ-साथ कृषि को समर्थन देने के लिए विभिन्न उपाय लागू किए हैं—

- जल प्रबंधन और सिंचाई— जल संकट को देखते हुए, सूक्ष्म सिंचाई (ड्रिप और स्प्रिंकलर सिस्टम) का विस्तार और चेकडैम, वर्षा जल संचयन संरचनाओं और नहर नेटवर्क का निर्माण जैसी पहल की जा रही हैं। उदाहरण के लिए, सब्सिडी कार्यक्रम तिलहन और गन्ने की खेती में ड्रिप सिंचाई को बढ़ावा देते हैं। वाटरशेड विकास परियोजनाओं का उद्देश्य भूजल पुनर्भरण और वर्षा जल के उपयोग में सुधार करना है। इन प्रयासों का लक्ष्य फसल की सघनता बढ़ाना और सूखे के प्रभावों को कम करना है।
- गुणवत्तापूर्ण बीज और इनपुट— सरकार विभिन्न कार्यक्रमों से उच्च उपज देने वाली और सूखा-प्रतिरोधी बीजों की किस्में वितरित करते हैं, विशेष रूप से सरसों, बाजरा और दालों के लिए। किसान प्रशिक्षण और मृदा स्वास्थ्य कार्ड अभियान इष्टतम उर्वरक उपयोग के बारे में जानकारी देते हैं। विस्तार सेवाएँ संतुलित पोषण और एकीकृत कीट प्रबंधन जैसी प्रथाओं को प्रोत्साहित करती हैं। प्रमाणित बीजों और बेहतर आदानों तक बेहतर पहुँच का उद्देश्य उपज बढ़ाना है, जैसा कि अनाज और तिलहन की उत्पादकता में वृद्धि से देखा जा सकता है (उदाहरण के लिए, 2010–24 के दौरान अनाज की उपज 1863 किलोग्राम/हेक्टेयर से बढ़कर 2233 किलोग्राम/हेक्टेयर हो गई)।
- किसान कल्याण और ऋण— राज्य कृषि उपकरणों (जैसे ट्रैक्टर और सीड ड्रिल) पर सब्सिडी प्रदान करता है, और फसल खराब होने से बचाने के लिए बीमा योजनाएँ (जैसे प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना) भी चलाता है। पीएम-किसान सम्मान निधि जैसी योजनाएँ छोटे किसानों को सीधे नकद हस्तांतरण प्रदान करती हैं। बैंकों और सहकारी समितियों के माध्यम से ग्रामीण ऋण प्रवाह को प्रोत्साहित किया जाता है। इन नीतियों का उद्देश्य खेती में निवेश बढ़ाना और आय को बढ़ाना है।
- बाजार समर्थन और विविधीकरण— बेहतर मूल्य प्राप्ति सुनिश्चित करने के लिए प्रमुख क्षेत्रों में कृषि मंडियों का विकास या उन्नयन किया गया है। सरकार विस्तार अभियानों के माध्यम से फसल विविधीकरण को बढ़ावा देती है। उदाहरण के लिए, कम पानी वाली दालों की खेती को प्रोत्साहित करना या बागवानी (खजूर, किन्नु) शुरू करना। तिलहन और बाजरा में राजस्थान की मजबूती को देखते हुए स्थानीय स्तर पर मूल्य संवर्धन के लिए प्रसंस्करण इकाइयाँ (जैसे तेल मिलें, ग्वार गम संयंत्र) स्थापित करने पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

आर्थिक समीक्षा में इन व्यापक क्षेत्रों (जल प्रबंधन, बीज गुणवत्ता, किसान कल्याण) को प्राथमिकता के रूप में शामिल किया गया है। हालाँकि योजनाओं के परिणामों पर व्यापक आँकड़े इस दस्तावेज के दायरे से बाहर हैं, फिर भी सकारात्मक उत्पादन और उत्पादकता की प्रवृत्तियाँ दर्शाती हैं कि इन उपायों ने विकास में योगदान दिया है। राज्य की संरचनात्मक बाधाओं को दूर करने के लिए निरंतर नीतिगत समर्थन महत्वपूर्ण होगा।

भविष्य का दृष्टिकोण

2025 और उसके बाद की स्थिति को देखते हुए राजस्थान की कृषि मध्यम वृद्धि के लिए तैयार है, जो नीतिगत और जलवायु परिणामों पर निर्भर है। कृषि जीवीए में मजबूत ऐतिहासिक वृद्धि (2024–25 तक लगभग

9.6 प्रतिशत चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर) और बेहतर होती पैदावार निरंतर विस्तार की क्षमता का संकेत देती है। प्रमुख प्रवृत्तियाँ और संभावनाएँ इस प्रकार हैं—

- निरंतर उत्पादकता और उत्पादन वृद्धि— हाल की प्रगति को देखते हुए, फसल पैदावार (विशेषकर अनाज और तिलहन) में तकनीक अपनाने के साथ सुधार जारी रहने की संभावना है। यदि वर्तमान वृद्धि जारी रहे, तो समग्र कृषि उत्पादन तीव्र गति से बढ़ेगा, जैसा कि बढ़ते अखिल फसल सूचकांक में परिलक्षित होता है। तिलहन और बाजरा में राजस्थान का नेतृत्व दर्शाता है कि इन क्षेत्रों का विस्तार संभवतः सिंचित क्षेत्र या उन्नत किस्मों के अधिक हिस्से के साथ जारी रहेगा।
- उच्च मूल्य वाली फसलों में विविधीकरण— बागवानी (फल और सब्जियाँ), औषधीय पौधों और दालों में वृद्धि की संभावना है, जिससे प्रति इकाई क्षेत्रफल में बेहतर आय हो सकती है। प्रोटीन युक्त आहार की ओर राष्ट्रीय रुझान दालों की खेती को और बढ़ावा दे सकता है, जिससे राजस्थान के दाल उत्पादन (जो पहले से ही भारत के कुल उत्पादन का लगभग 13.9 प्रतिशत है) में वृद्धि हो सकती है। इसके अतिरिक्त, पशुधन और डेयरी महत्वपूर्ण संबद्ध क्षेत्र बने हुए हैं, जिनके फसल उत्पादन के साथ-साथ बढ़ने की संभावना है।
- जल-स्मार्ट कृषि— भविष्य की संभावनाएँ पूर्णता जल उपलब्धता पर निर्भर करती हैं। यदि सूक्ष्म सिंचाई और वाटरशेड कार्यक्रमों का विस्तार जारी रहता है, तो अधिक भूमि को स्थायी रूप से सिंचित किया जा सकता है, जिससे प्रति हेक्टेयर उत्पादन में वृद्धि हो सकती है। उदाहरण के लिए, सिंचाई में सुधार से गन्ने की पैदावार और भी बढ़ सकती है, या अनाज व दालों की दोहरी फसल उगाने की अनुमति मिल सकती है। जल संरक्षण और सौर पंपिंग पर सरकारी योजनाएँ लचीलापन बढ़ा सकती हैं।
- जलवायु परिवर्तन अनुकूलन— बढ़ते तापमान और वर्षा की परिवर्तनशीलता के लिए अनुकूली उपायों (सूखा-सहिष्णु फसलें, मौसम बीमा, सिंचाई) की आवश्यकता होगी। यदि प्रभावी प्रबंधन किया जाए, तो यह क्षेत्र प्रतिकूल प्रभावों को कम कर सकता है। फसल बीमा कवरेज और पूर्व चेतावनी प्रणालियों का विस्तार होने की संभावना है।
- आर्थिक और बाजार कारक— राष्ट्रीय और वैश्विक वस्तुओं की कीमतों के साथ ही व्यापार नीतियाँ भी राजस्थान की कृषि को प्रभावित करेंगी। उदाहरण के लिए, तिलहन की ऊँची कीमतें या ग्वार गम के नए निर्यात अवसर उत्पादन को बढ़ावा दे सकते हैं। इसके विपरीत, सोयाबीन या कपास में प्रतिस्पर्धा के कारण रकबे में बदलाव हो सकता है।

ऐसा प्रतीत होता है कि कृषि राजस्थान की ग्रामीण अर्थव्यवस्था का एक आधार बनी रहेगी। सहायक नीतियों और नवाचारों के साथ, यह क्षेत्र वास्तविक रूप से लगभग 6–8 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि दर बनाए रख सकता है। राज्य की जल प्रबंधन पहल और फसल पद्धति समायोजन इस क्षमता को साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँगे। फिर भी, चरम मौसम की घटनाओं और संसाधनों की कमी से उत्पन्न अनिश्चितता का अर्थ है कि विकास सुचारु नहीं हो सकता है, जो लचीलापन विकसित करने की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

सुझाव

- सरकार द्वारा जन जागरूकता एवं सब्सिडी जैसे कार्यक्रमों को विस्तार करके सूक्ष्म सिंचाई क्षेत्र का तीव्र गति से विस्तार किया जाना चाहिए ताकि सीमित जल संसाधनों का कुशल उपयोग हो सके।
- फसल विविधीकरण की महत्वता के बारे में किसानों को जागरूक किया जाना चाहिए ताकि उनकी आय में स्थिरता आई जा सके।
- जल संरक्षण उपायों को मजबूत करने के लिए पारंपरिक ज्ञान एवं आधुनिक तकनीकों के संयोजन को अपनाया जाए जैसे जल संचयन, चेक डैम, वर्षा जल संचयन आदि।

- आधुनिक तकनीकों को अपनाने हेतु किसानों के लिए प्रोत्साहन राशि को बढ़ाया जाए।
- कृषि प्रसंस्करण उद्योगों को ग्रामिण क्षेत्रों में बढ़ावा देने के साथ छोटे किसानों को विशेष सुविधा दी जाए ताकि किसानों को मूल्य संवर्धन का लाभ मिल सके।
- राज्य सरकार अन्य राज्यों की सरकारों के साथ मिलकर एमएसपी में और अधिक फसलों को सम्मिलित करवाने तथा एमएसपी मूल्यों में अच्छी वृद्धि के लिए पूरजोर प्रयास करें ताकि किसानों को उचित मूल्य मिलने के साथ फसल उत्पादकता को बढ़ाने में भी मदद मिल सके।
- जलवायु-अनुकूल कृषि तकनीकों को बढ़ावा देने के साथ विपरीत मौसम के आजीविका के संसाधनों में अभिवृद्धि की जाए ताकि सूखा एवं जलवायु जोखिम कम होने के साथ सहनशीलता बढ़ सके।

निष्कर्ष

राजस्थान की कृषि ने पिछले एक दशक में सकल मूल्यवर्धन में वृद्धि, उत्पादन में विस्तार और प्रमुख फसलों की पैदावार में सुधार के साथ शानदार वृद्धि दर्ज की है। यह कई क्षेत्रों (सरसों, बाजरा, ग्वार) में अग्रणी स्थान रखता है और दलहन और तिलहन में भी तेजी से विविधता ला रहा है। हालाँकि, अंतर्निहित चुनौतियाँ, जिसमें मुख्यतः जल की कमी और जलवायु परिवर्तनशीलता, इसके भविष्य को प्रभावित कर रही हैं। सिंचाई, गुणवत्तापूर्ण आदानों और किसान कल्याण पर राज्य की नीतिगत ध्यान प्रगति को बनाए रखने के लिए आवश्यक है।

आंकड़ों पर आधारित तस्वीर बताती है कि कुशल कृषि के लिए संसाधनों (जैसे ड्रिप सिंचाई, सूखा-प्रतिरोधी किस्में) और बाजार के बुनियादी ढाँचे में निरंतर निवेश जरूरी होगा। फसल विविधीकरण (दालों, बाजरा, बागवानी) को प्रोत्साहित करने से राजस्थान की खेती अधिक लचीली और लाभदायक बन सकती है। संक्षेप में, राजस्थान का कृषि क्षेत्र उन्नति की ओर अग्रसर है, लेकिन इसकी पूरी क्षमता का उपयोग करने के लिए प्राकृतिक संसाधनों की सीमाओं और अनुकूलनीय रणनीतियों पर निरंतर ध्यान देने की आवश्यकता होगी। इसलिए नीति निर्माताओं को जल उपयोग दक्षता, तकनीकी नवाचार और जोखिम न्यूनीकरण पर जोर देना चाहिए ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि यहाँ दर्ज सकारात्मक परिणाम भविष्य में भी जारी रहें।

सन्दर्भ गन्थ सूची

1. Chandra, A., & Kalra, A. (2017). Impact of climate change on agriculture sector of Rajasthan. *International Journal of Scholarly Research Journal for Humanity Sciences & English Language*, 4(22), 5486–5492.
2. Modi, A., & Gopinath, P. (2019). Changes in Cropping Pattern in Rajasthan: 1957 to 2017. *Indian Journal of Agricultural Economics*, 74(1), 155-172.
3. Indian Council of Agricultural Research (ICAR). (2020). Annual report 2019–20. ICAR, New Delhi.
4. Mehriya, M. L., Geat, N., Sarita, Singh, H., A. Mattar, M., & O. Elansary, H. (2020). Response of drip irrigation and fertigation on cumin yield, quality, and water-use efficiency grown under arid climatic conditions. *Agronomy*, 10(11), 1711. <https://doi.org/10.3390/agronomy10111711>.
5. Singh, K., & Meena, S. R. (2021). Trends in productivity of major crops in Rajasthan. *Journal of Rural Development*, 40(2), 245–258.
6. NABARD. (2021). Sustainable agricultural practices and value chain development in Rajasthan. National Bank for Agriculture and Rural Development.
7. World Bank. (2021). Implementation completion and results report: Rajasthan Agricultural Competitiveness Project (RACP). World Bank Group.

8. Datta, P., & Behera, B. (2022). Climate change and Indian agriculture: A systematic review of farmers' perception, adaptation, and transformation. *Environmental Challenges*, 8, 100543.
9. Chauhan, A., & Kulshrestha, S. K. (2024). Climate change and agriculture in Rajasthan: present perspective and future strategies. In *Climate, Environment and Agricultural Development: A Sustainable Approach Towards Society* (pp. 37-56). Singapore: Springer Nature Singapore.
10. Government of India. (2024). *Agricultural Statistics at a Glance*. New Delhi: Ministry of Agriculture & Farmers Welfare.
11. Government of Rajasthan. (2025). *Economic Review 2024–25*. Jaipur: Directorate of Economics and Statistics, Government of Rajasthan.
12. Department of Agriculture & Farmers Welfare. (2025). *Agricultural Statistics and Productivity Data*. Government of India.
13. Directorate of Economics and Statistics. (2025). *Agricultural Production Statistics of Rajasthan*. Jaipur: Government of Rajasthan.

